ISSN 2278-8808 SJIF 2014 = 4.889
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

हिंदी साहित्य के विशेष संदर्भ में बी.एड. हिंदी पाठ्यक्रम का अध्ययन

संदिप ज्ञानदेव मुळे
शोधार्थी छात्र शिक्षाशास्त्र एवं विस्तार विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,पुणे.

Abstract

माध्यमिक अध्यापक बनने हेतु अपने विशिष्ट विषय में स्नातक होने के उपरांत शिक्षाशास्त्र में स्नातक अर्थात बी. एड. करना अनिवार्य है। बी.एड. की पाठ्यचर्या के तहत छात्र अध्यापक को माध्यमिक अध्यापक में परिवर्तित करने हेतु विभिन्न प्रकार के अध्ययन अनुभव प्रदान किए जाते हैं जिनमें चयनित विषयों उदा. मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र आदि का अध्यापन, विभिन्न पाठशालाओं में अध्यापन अभ्यास पाठ, विभिन्न प्रकार के प्रैक्टिकल आदि शामिल है। किसी भी विषय का अध्यापक बनने के लिए छात्र के पास अध्यापनशास्त्र का ज्ञान होने के साथ–साथ उस विषय का ज्ञान होना भी अनिवार्य है। इसको ध्यान में लेते हुए वर्ष २०१५–१६ में बी.एड. पाठ्यचर्या में परिवर्तन कर दिया गया है जिसके चलते प्रत्यक्ष विषयों का आशय भी पाठ्चर्या में समाविष्ट कर दिया गया है। प्रस्तुत शोधालेख के माध्यम से शाधार्थी द्वारा हिंदी साहित्य के विशष संदर्भ में बी.एड. हिंदी पाठ्यक्रम का अध्ययन किया गया है।

***Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at www.srjis.com**

१.१ पृष्ठभूमि

भारत में शिक्षा प्रणाली की लंबी परंपरा रही है। प्राचीन काल से ही भारत में अध्ययन–अध्यापन का कार्य चलता आ रहा है जिसका लगभग पॉच हजार से भी अधिक वर्षों का अपना इतिहास रहा है। परंतु अन्य उन्नत देशों के परिप्रेक्ष में भारत का अध्यापक प्रशिक्षण का इतिहास अधिक लंबा नहीं है हांलाकि, उसके आम रूप में लगभग डेढसौ वर्ष की परंपरा का समुच्चय जुटाया जा सकता है। मोटे तौर पर भारत में अध्यापक शिक्षा का आरंभ बीसवीं सदी के आरंभ के साथ ही पाया जाता है। तबसे लगभग सौं वर्षों में इसमें काफी संशोधन, परिवर्तन एवं उतार चढाव पाए गए है।

अध्यापक प्रशिक्षण में यह मॉग हमेंशा से रही है कि बी.एड. की पाठ्यचर्या दोन वर्ष की होनी चाहिए इस आशय का समर्थन विभिन्न अयोगों एवं समितियों में पाया जाता है। स्वतंत्रता पश्चात सालों बीत जाने के बाद अंत में इसे उचित महूरत प्राप्त हुआ। वर्ष २०१५–१६ से बी.एड. की पाठ्यचर्या में परिवर्तन भी किया गया है। इसी वर्ष से संपूर्ण अध्यापक प्रशिक्षन का पूरा ढॉचा ही बदला गया, इसमें छात्रसंख्या, अध्यापक, पाठ्यचर्या एवं कोर्स की अवधी विशेष उल्लेखनीय है।

माध्यमिक अध्यापक बनने हेतु अपने विशिष्ट विषय में स्नातक होने के उपरांत शिक्षाशास्त्र में स्नातक अर्थात बी.एड. करना अनिवार्य है। बी.एड. की पाठ्यचर्या के

तहत छात्र अध्यापक को माध्यमिक अध्यापक में परिवर्तित करने हेतु विभिन्न प्रकार के अध्ययन अनुभव प्रदान किए जाते हैं जिनमें चयनित विषयों उदा. मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र आदि का अध्यापन, विभिन्न पाठशालाओं में अध्यापन अभ्यास पाठ, विभिन्न प्रकार के प्रैक्टिकल आदि शामिल है। किसी भी विषय का अध्यापक बनने के लिए छात्र के पास अध्यापनशास्त्र का ज्ञान होने के साथ—साथ उस विषय का ज्ञान होना भी अनिवार्य है। इसको ध्यान में लेते हुए वर्ष २०१५—१६ में बी.एड. पाठ्यचर्या में परिवर्तन कर दिया गया है जिसके चलते प्रत्यक्ष विषयों का आशय भी पाठ्चर्या में समाविष्ट कर दिया गया है।

प्रस्तुत शोधालेख के माध्यम से शाधार्थी द्वारा हिंदी साहित्य के विशष संदर्भ में बी.एड. हिंदी पाठ्यक्रम का अध्ययन किया गया है। जिसके तहत बी.एड. के हिंदी पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक भाग में हिंदी साहित्य के इतिहास का कौनसे भाग का समावेश होना आवश्यक है इसका अध्ययन किया गया है।

१.२ समस्या विवरण

सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के अंतर्गतबी.एड्.पाठ्यचर्या के तहत हिंदी विषय के सैद्धांतिक पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य के आवश्यक आशय का अध्ययन करना।

१.३ क्रियात्मक परिभाषाएँ

१. बी.एड्. पाठ्यचर्या

सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के अंतर्गतनियमित बी.एड्.कोर्स हेतु वर्ष २०१५—१६ से लागू की गई पाठ्यचर्या इसशोधालेख के संदर्भ में बी.एड. पाठ्यचर्या है।

२. सैद्धांतिक पाठ्यक्रम

बी.एड. पाठ्यचर्या के प्रथम वर्ष में शामिल १०६ का २ अर्थात अंडरस्टॅडिंग डिसिप्लिन ॲण्ड स्कूल सब्जेक्ट हिंदी विषय प्रस्तुत अनुसंधान आलेख हेतु सैद्धांतिक पाठ्यक्रम है।

३. हिंदी साहित्य का आवश्यक आशय

हिंदी के प्रचलित अध्यापकों की दृष्टी से, बी.एड. की पाठ्यचर्या में हिंदी के सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के तहत हिंदी केछात्राध्यापकों को पढाए जाने हेतु, हिंदी साहित्य के इतिहास का,उपयोगी आशय प्रस्तुतशोधालेख हेतु हिंदी साहित्य का आवश्यक आशय है।

१.४ उद्देश्य

१. सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के अंतर्गत बी.एड्. पाठ्यचर्या के तहत हिंदी विषय के सैद्धांतिक पाठ्यक्रम में समावेश करने हेतु हिंदी साहित्य के आवश्यक आशय का अध्ययन करना।

१.५ शोधालेख प्रश्न

सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के अंतर्गत बी.एड्. पाठ्यचर्या के तहत हिंदी विषय के सैद्धांतिक पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य के इतिहास का कौनसे आवश्यक आशय का समावेश किया जा सकता है?

१.६ मान्यताएँ

१. वर्ष २०१५—१६ से बी.एड. कोर्स में समूल परिवर्तन किया गया है।
२. वर्ष २०१५—१६ से बी. एड. की पाठ्यचर्या में परिवर्तन किया गया है।

३. वर्ष २०१५—१६ से बी. एड. की पाठ्यचर्या के अंतर्गत हिंदी शिक्षा के सैद्धांतिक विषयों में परिवर्तन किया गया है।

१.७ विस्तार एवं सीमाएँ

१.७.१ विस्तार

१.प्रस्तुत अनुसंधान सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे के अंतर्गत बी.एड. कोर्स से संबंधित है।

२.प्रस्तुत अनुसंधान सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे के अंतर्गत बी.एड. पाठ्यचर्या से संबंधित है।

१.७.२ सीमाएँ

१.प्रस्तुत शोधालेख बी.एड. पाठ्यचर्या के तहत हिंदी के सैद्धांतिक पाठ्यक्रम से ही संबंधित है।

२.प्रस्तुत अनुसंधान के निष्कर्ष सूचना संग्रह साधन को नमुना अध्यापकों द्वारा दी गई प्रतिक्रिया पर निर्भर है।

३.प्रस्तुत अनुसंधान सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे की बी.एड. पाठ्यचर्या के अंतर्गत हिंदी शिक्षण के सैद्धांतिक पाठ्यचर्या में हिंदी साहित्य के इतिहास के आशय का समावेश करने से संबंधित है।

१.८ अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अनुसंधान सर्वेक्षण पद्धति से किया गया। माध्यमिक पाठशालाओं में अध्यापन का कार्य कर रहे हिंदी के अध्यापकों से जानकारी प्राप्त कर निष्कर्ष निकाले गए।

१.९ प्रतिदर्शन कार्यवाही

१.९.१ जनसंख्या

प्रस्तुत अनुसंधान में पुणे शहर की भौगोलिक सीमा में माध्यमिक पाठशालाओं में हिंदी अध्यापन का कार्य कर रहे हिंदी विषय अध्यापक जिनका पॉच वर्ष का अध्यापन अनुभव है, जिन्होंने बी.एड. किया है और जो हिंदी के स्नातक भी है, इस अनुसंधान की जनसंख्या है।

१.९.२ प्रतिदर्श

प्रस्तुत अनुसंधान में पुणे शहर की भौगोलिक सीमा में माध्यमिक पाठशालाओं में हिंदी अध्यापन का कार्य कर रहे हिंदी विषय अध्यापक जिनका पॉच वर्ष का अध्यापन अनुभव है, जिन्होंने बी.एड. किया है और जो हिंदी के स्नातक भी है, में से १० अध्यापकों का चयन प्रासंगिक प्रतिदर्श चयन पद्धति से अनुसंधान में प्रतिदर्श के तौर पर किया गया.

१.१० सूचना संग्रह साधन

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए साक्षत्कार सूची का प्रयोग सूचना संग्रह साधन के तौर पर किया गया। इस साक्षत्कार सूची में हिंदी सैद्धांतिक पाठ्यक्रम में समावेश करने हेतु हिंदी साहित्य के इतिहास के आवश्यक आशय के बारे में कुल पॉच मुक्त प्रश्न पूछे गए। इसमें शामिल है,

१) हिंदी साहित्य इतिहास का कौनसे भाग का समावेश होना चाहिए?

२) साहित्य इतिहास के कौनसे कालों का समावेश होना चाहिए?

३) हिंदी के कौनसे साहित्यकारों का समावेश होना चाहिए?

४) कालों के बारे में कौनसी जानकारी का समावेश होना चाहिए?

५) साहित्यकारों की कौनसी जानकारी का समावेश होना आवश्यक है?

१.११संख्याशास्त्रीय साधन

प्रस्तुत अनुसंधान में सूचना संग्रह करते समय सभी मुक्त प्रश्न पूछे जाने के कारण उनके उत्तर विस्तार से आए थे जिसको ध्यान में रखते हुए प्राप्त सूचना का विश्लेषण गुणात्मक पद्धति से किया गया।

१.१२ संशोधन की कार्यवाही

- प्रासंगिक पद्धति से १० हिंदी अध्यापकों से संपर्क कर नमुना चुना गया।
- प्रत्येक अध्यापक से लगभग २५ से ४५ मिनट तक का साक्षात्कार किया जिसमें कुल पॉच मुक्त प्रश्न उनसे पूछे गए।
- प्राप्त सूचना का संग्रह कर उसका उचित रिकार्ड रखा गया।
- प्राप्त सूचना के आधार पर अनुसंधान के निष्कर्ष निकाले गए।

१.१३ अनुसंधान केनिष्कर्ष

बी.एड. की पाठ्चर्या के अंतर्गत हिंदी सैद्धांतिक विषय पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य इतिहास के निम्न आशय का समावेश करना चाहिए :

- हिंदी साहित्य के काल एवं साहित्यकार
  - आदिकाल : आदिकाल का संक्षिप्त परिचय एवं उसकी विशेषताएँ, विद्यापति का संक्षिप्त परिचय एवं उनके द्वारा लिखित कृतियों के नाम
  - भक्तिकाल :भक्रितकाल का संक्षिप्त परिचय एवं उसकी विशेषताएँ, कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास का संक्षिप्त परिचय एवं उनके द्वारा लिखित कृतियों के नाम
  - रीतिकाल : रीतिकाल का संक्षिप्त परिचय एवं उसकी विशेषताएँ, बिहारीदास का संक्षिप्त परिचय एवं उनके द्वारा लिखित कृतियों के नाम
  - आधुनिक काल : आधुनिक काल की विभिन्न साहित्यक धारा का परिचय जिसमें भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग एवं प्रयोगवादी युग का संक्षिप्त परिचय, भारतेंदु हरिश्चंद्र का संक्षिप्त परिचय एवं उनके द्वारा लिखित कृ तियों के नाम

१.१४ संदर्भसूची

एन.सी.टी.ई. (२०१४). ***एन.सी.टी.ई. रेग्युलेशन*** *२०१४.एन.सी.टी.ई.*

*मुळे, सं. (जनवरी २०१६).****एन.सी.टी.ई. रेग्युलेशन २०१४ के संदर्भ में बी.एड. हिंदी शिक्षा में हुए परिवर्तनों का अभ्यास.*** *राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधालेख.*

चव्हाण, दी. व मुळे, सं. (२०१०). ***शैक्षणिक संशोधन आराखडा.*** *नाशिक: इनसाइट पब्लिकेशन्स.*

मुळे, स. (२०११). ***शैक्षणिक संशोधनाची ओळख.*** *नाशिक: इनसाइट पब्लिकेशन्स.*

सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे.(२०१५) ***बी.एड. पाठ्यचर्या.*** *पुणे : सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय.*